IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वतंत्र काल मे बिहार के सामाजिक विकास में अनुग्रह नारायण सिंह की भूमिका।

कुमार गौरव

शोध छात्र

विश्वविधालय राजनिति विज्ञान विभाग

बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविधालय, मुजफ्फरपुर

अनुग्रह नारायण सिंह के समाजवादी साथी डा0 राम मनोहर लोहिया ने काफी पहले सतत् क्रान्ति की चर्चा की थी। अपने समाजवादी सहयोगी के उस सगुण चिन्तन को लोकनायक ने सामाजिक विकास के अपने विचार दर्शन में समाहित कर लिया और जिसके माध्यम से अनुग्रह नारायण सिंह ने गांधी जी के पूर्ण स्वराज्य के अधूरे स्वप्न को साकार करने का प्रयत्न किया। वे जनता को सत्ता का हस्तान्तरण करने के पक्षधर थे। वे मानते थे कि जनता के हाथ सत्ता हस्तान्तरित होने से ही वास्तविक अर्थ में स्वारज स्थापित हो सकेगा।

सामाजिक विकास –:अनुग्रह नारायण सिंह के अनुसार सामाजिक विकास में शामिल होने वाल हर व्यक्ति को सबसे पहले जातिवाद से जुड़ी सभी परमपराओं का उन्मूलन करना होगा। आपस में जाति के व्यवहार को छोड़ना होगा। खान–पान के मामलों में भी एकता का आग्रह करना होगा । विज्ञान, टेकनोलॉजी और ओद्योगीकरण के विकास के साथ–साथ इस प्रकार की छुआछुत की भावना कम होती जाएगी।

जातीयता हमारे लिए एक अभिशाप है। जातीयता से समाज का हर क्षेत्र प्रभावित होता है । हमारी आज की राजनीति ने जाति व्यवस्था को और मजबूत किया है। बुद्ध से लेकर आज तक कितने ही महापुरूषों ने उस प्रहार किये हैं, फिर भी एसका जोर आज भी कायाम है। अपने देश में शायद जातिवाद को मिटाना कुछ मायने में वर्ग को मिटाने से से भी अधिक महत्वपूर्ण है। जाति –प्रथा को जोडने का एक महत्वपूर्ण साधन है।

अन्तर्जातीय विवाह हो सकता है। ब्राह्मण–हरिजन के सहभोज का कार्यक्रम भी एक कदम आगे बढ़ाने के लिए सहायक सिद्ध हो सकता है। अब समय आ गया है कि हम हिन्दू समाज के इस कलंक को मिटा दें और

भाईचारे व समानता को अपना आदर्श बनायें व जीवन में उतारें । इस प्रकार समाज की कुरीतियों, रूढ़ियों के विरूद्ध भी संघर्ष आवश्यक है। शादी–विवाह का पवित्र संस्कार आज बाजार बन कर रह गया है। तिलक–दहेज जैसी कुरीतियाँ परिवार की प्रतिष्ठा और कुल की मर्यादा का अंग बन गयी है। शादी–विवाह में वैभव का प्रदर्शन बन्द होना चाहिए। समाज–परिर्वन का यह अत्यन्त आवश्यक अंग है किन्तु इसकी ओर 'रेडिकल ' लोगों का भी ध्यान कम जाता है। समाज परिवर्तन की दृष्टि से आज समाज के सभी अंगों मे आमूल–परिवर्तन लाना होगा। ऊँच–नीच के भेद मिटाने होंगे। दलित यदि शाोषित बने ही रहेंगे तो सम्पूर्ण क्रान्ति कभी नहीं होगी।

संदर्भ–सूची :–

.1. अनुग्रह नारायण सिंह : माई टोटल रिवोल्यूशन, एवरी मेंस, दि–22 पृष्ठ 74

2. अनुग्रह नारायण सिंहः राजनैतिक क्रान्ति के लिए आहवान, पृष्ठ–41

3. वी0एन0 सिंहः भारतीय सामाजिक चिन्तन, पृष्ठ–316

4. अनुग्रह नारायण सिंह उद्धष्त, अनुग्रह नारायण सिंह पृष्ठ–103

5. पूर्वोक्त पृष्ठ–585

6. लोक दर्षष्टि में जय प्रकाश, में उद्धष्त , पृष्ठ–85

7. अनुग्रह नारायण सिंह हमारी नजरों मे'' द रेडिकल ह्सूमेनिस्ट, मार्च, 1978, पृष्ठ–10

8. अनुग्रह नारायण सिंह, लोक–स्वराज्य, (सर्व सेवा संघ, वाराणसी) जुलाई, 1999, पृष्ठ–10

9. अनुग्रह नारायण सिंह, राजनैतिक क्रान्ति, (सर्व सेवा संघ, वाराणसी) सितम्बर, 1999

10. पूर्वोक्त, पृष्ठ–27